9
सूचकांकः समस्याएं और उपयोग

9.1 भूमिका

पिछले पाठ में अपने सूचकांकों की विशेषताएं तथा उनकी रचना करने की विधियों के बारे में पढ़ा। सूचकांक बनाने में बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये समस्याएँ मुख्यतः मदों, भारों, आधार वर्ष आदि के चुनाव करने से संबंधित होती हैं। इस पाठ में आप इन समस्याओं के बारे में पढ़ेंगे। सूचकांक बनाने में समस्याओं के बावजूद इनका व्यवहारिक जीवन में बहुत महत्त्व है। सरकार को इनसे बहुत उपयोगी सूचना मिलती है। इस पाठ में आप सूचकांकों के उपयोगों के बारे में भी पढ़ेंगे।

9.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- सूचकांकों को बनाने में आने वाली समस्याओं को समझ सकेंगे;
- सूचकांकों के उपयोग बता सकेंगे;
- पत्र-पत्रिका या किसी पुस्तक में दिए गए सूचकांक का अध्ययन कर सकेंगे।

9.3 सूचकांक रचना में आने वाली समस्याएं

सूचकांकों की रचना करते समय निम्नलिखित समस्याएं सामने आती हैं :

1. सूचकांक का उद्देश्य :

सूचकांक रचना से पूर्व हमें उनका उद्देश्य निश्चित करना आवश्यक होता है। यानी हम उनसे क्या मापना चाहते हैं और उनका कैसे प्रयोग करना चाहते हैं। निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यदि सूचकांक ढंग

से बनाया जाए तो यह बहुत उपयोगी व शक्तिशाली उपकरण है। लेकिन यदि यह ढंग से नहीं बनाया गया है तो बहुत संभव है कि यह गलत व भ्रामक परिणाम दे। कोई भी सूचकांक सर्व-उद्देशीय नहीं हो सकता। प्रत्येक सूचकांक का सीमित व विशेष उपयोग होता है। सूचकांक में सम्मिलित की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं के चयन के बारे में निर्णय, उनकी कीमतें, आधार वर्ष का चयन आदि, (इन पर आगे चलकर विस्तार से चर्चा करेंगे), ये सभी सूचकांक के उद्देश्य पर निर्भर करते हैं। अतः इस बारे में अतिरिक्त सर्तकता की आवश्यकता होती है।

2. आधार वर्ष या अवधि का चुनाव :

आप पढ़ चुके हैं कि कीमत सूचकांक एक मूल्यानुपात के रूप में व्यक्त किया जाता है। इसलिए हमें तुलना करने के लिए एक उपयुक्त संदर्भ चाहिए। इसे आधार या सन्दर्भ अवधि कहते हैं। यह आधार अवधि वह अवधि होती है जिसके साथ तुलना की जाती है। यह एक वर्ष या एक माह या एक दिन हो सकती है। आधार अवधि का चुनाव सूचकांक के उद्देश्य पर निर्भर करता है। यह बहुत पहले की अवधि नहीं होनी चाहिए क्योंकि समय के साथ-साथ कुछ पुरानी वस्तुओं का महत्त्व समाप्त हो जाता है और मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए नई-नई वस्तुएं बाजार में विक्रय के लिए आ जाती हैं। यह आधार अवधि सामान्य आर्थिक क्रियाओं वाली अवधि होनी चाहिए। यह ऐसी अवधि नहीं होनी चाहिए जिसमें कोई युद्ध हुआ हो या कोई प्राकृतिक विपत्ति जैसे भूकम्प, बाढ़, सूखा, महामारी आदि आई हो।

3. वस्तुओं और सेवाओं का चुनाव :

यह चुनाव भी सूचकांक के उद्देश्य पर निर्भर करता है। उद्देश्य पूर्ति के लिए चुनी गई वस्तुएं और सेवाएं ऐसी होनी चाहिए जो संबंधित वर्ग के व्यक्तियों में लोकप्रिय हों तथा उनकी आदतों रीति-रिवाजों व आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करें। मान लीजिए, हम दिल्ली में ओखला के औद्योगिक श्रमिकों का निर्वाह व्यय सूचकांक बनाना चाहते हैं। इसके लिए हमें उन लोगों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की सूची बनानी पड़ेगी। ये औद्योगिक श्रमिक कालीन, रेफ्रिजरेटर, केक, पेस्ट्री या वी.सी. आर. आदि का प्रयोग नहीं करते हैं। अतः इन वस्तुओं को सूची में शामिल नहीं किया जा सकता। किन वस्तुओं और सेवाओं का चुनाव किया जाए, उनकी मात्रा व संख्या आदि के बारे में निर्णय का सबसे अच्छा आधार परिवार बजट संबंधी पूछताछ है। यह पूछताछ उन लोगों से की जा सकती है जिनके लिए हम सूचकांक बना रहे हैं। उपरोक्त उदाहरण में लोग औद्योगिक क्षेत्र के श्रमिक हैं। हम इनमें से कुछ परिवार चुन सकते हैं और वे किन वस्तुओं और सेवाओं का साधारणतया उपयोग करते हैं, उनकी कितनी कीमत देते हैं, कहां से खरीदते हैं आदि के बारे में उनसे पूछताछ कर सकते हैं। हम उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रत्येक वस्तु और सेवा की मात्रा भी मालूम कर सकते हैं।

4. मूल्य (कीमत) उद्धरण का चुनाव :

सूचकांक में शामिल की गई वस्तुओं और सेवाओं के चुनाव के बाद उनकी कीमतों का चुनाव (जिन्हें कीमत उद्धरण भी कहते हैं) हमारी अगली समस्या है। ऊपर बताए गए परिवार बजट पूछताछ के परिणामों को देखकर इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। थोक कीमतें या फैशनप्रिय क्षेत्र में प्रचलित कीमतें लेना उचित नहीं होगा क्योंकि श्रमिक ना तो थोक कीमतों पर और ना ही महंगे क्षेत्रों से चीजें खरीदते हैं। संभव है, इनके द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुएं फैशनप्रिए बाजारों में बिकती ही ना हों। इन औद्योगिक श्रमिकों के निर्वाह-व्यय का अध्ययन करने के लिए हमें जीवन-निर्वाह सूचकांक या उपभोक्ता कीमत सूचकांक बनाना है। ऐसे सूचकांक के लिए फुटकर कीमतें लेना ही उचित है।

5. भार का चुनाव :

सूचकांक बनाने में भार का चुनाव भी एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। परिवार बजट पूछताछ से हमें यह भी पता लग जाएगा कि श्रमिकों द्वारा उपभोग की जाने वाली सभी वस्तुओं का एक समान महत्त्व नहीं होता। कुछ वस्तुओं और सेवाओं पर उन्हें अपनी आय का अधिक प्रतिशत व्यय करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, औद्योगिक श्रमिकों के बजट में खाद्य पदार्थों का अधिक महत्त्व होता है क्योंकि वे अपनी आय का अधिक भाग इन पर व्यय करते हैं। जबकि शिक्षा, मनोरंजन या दवाइयों पर आय का वे कम भाग व्यय करते हैं, हालांकि कभी-कभी दवाइयों आदि का महत्त्व कपड़ों से ज्यादा होता है। अतः प्रत्येक वस्तु या वस्तुओं के समूह पर किए जाने वाले व्यय का, आय के अनुपात के आधार पर भार का निर्णय किया जाता है। विभिन्न वस्तुओं को भार प्रदान करने के विभिन्न तरीके हैं। कुछ लोग आधार वर्ष की मात्राओं (q_0) को तो कुछ लोग चालू वर्ष की मात्राओं को (q_1) और कुछ मूल्य भार (p_oq_0) को भार के रूप में प्रयोग करना अधिक अच्छा समझते हैं।

6. औसत का चुनाव :

आप पढ़ चुके हैं कि सूचकांक दो समय या स्थानों के बीच एक या अधिक संबंधित चरों में औसत परिवर्तन दिखाने वाली एक सांख्यिकीय रचना (माप) है। अब यह प्रश्न उठता है कि इस उद्देश्य के लिए किस औसत-माध्य, माध्यिका, बहुलक, गुणोत्तर माध्य आदि– का उपयोग किया जाए। यह माना जाता है कि गुणोत्तर माध्य औसत निकालने की सर्वोत्तम विधि है। लेकिन इसकी गणना में अनेक कठिनाइयों के कारण इसका बहुत कम प्रयोग किया जाता है तथा इसकी जगह समान्तर माध्य का प्रयोग किया जाता है।

औसत के चुनाव में एक अन्य समस्या यह आती है कि हम साधारण औसत या भार औसत किस विधि का प्रयोग करें। कम महत्त्व के अध्ययन के लिए साधारण औसत से काम चल सकता है। लेकिन अधिक सही तथा महत्त्वपूर्ण अध्ययन के लिए एक उपयुक्त भार औसत का प्रयोग करना आवश्यक है।

7. विधि का चुनाव :

सूचकांक बनाने की विधि का चुनाव भी सूचकांक के उद्देश्य पर निर्भर करता है।

याद रखिए

- सूचकांक बनाने से पहले इसके उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए।
- सूचकांक रचना में आधार अवधि बहुत पहले की अवधि नहीं होनी चाहिए तथा यह अवधि सामान्य आर्थिक क्रियाओं की होनी चाहिए।
- जिन वस्तुओं और सेवाओं को सूचकांक बनाने के लिए शामिल करना है उनका चुनाव सूचकांक के उद्देश्य और उन लोगों के वर्ग या समूह पर निर्भर करता है, जिनके लिए सूचकांक बनाया जा रहा है।
- परिवार बजट पूछताछ की सहायता से सूचकांक बनाने के लिए वस्तुओं और सेवाओं तथा उनका भार चुनने में आसानी हो जाती है।
- जो वस्तुएं और सेवाएं सूचकांक में शामिल की गई हैं, उनकी कीमतें उन बाजारों से प्राप्त करनी चाहिए जहाँ से वे व्यक्ति इन्हें खरीदते हैं।
- सूचकांक रचना में औसत निकालने के लिए समान्तर माध्य का अधिक प्रयोग किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 9.1

कोष्ठक में दिए गए विकल्पों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) आधार अवधि .... की अवधि होनी चाहिए।
(सामान्य आर्थिक क्रियाओं, युद्ध, बाढ़)

(ii) हमें सूचकांक रचना के लिए सबसे पहले यह निर्णय करना पड़ता है कि सूचकांक बनाने का क्या .... है। (भार, सूत्र, उद्देश्य, कीमत-उद्धरण)

(iii) औद्योगिक श्रमिकों के लिए सूचकांक बनाते समय हमें .... को शामिल करना चाहिए।
(अ) खाद्य वस्तुएं, रेफ्रिरेटर और टी०वी०
(ब) खाद्य वस्तुएं, कपड़ा, ईंधन और किराया
(स) मनोरंजन, शिक्षा, वी०सी०आर० और टी०वी०

(iv) निर्वाह व्यय सूचकांक बनाते समय हमें .... कीमतें लेनी चाहिए। (फुटकर, थोक)

9.4 सूचकांकों का महत्त्व

सूचकांकों के बहुत से उपयोग हैं। इनके कुछ उपयोग निम्नलिखित हैं।

(1) मूल्य सूचकांक निर्वाह लागत का मापक होता है। वस्तुओं ओर सेवाओं की कीमतें समय के साथ-साथ बदलती रहती हैं। व्यवहार में हम पाते हैं कि ये कीमतें अक्सर बढ़ती हैं। इससे रहन सहन के खर्चे भी बढ़ते हैं। इस कारण मजदूर तथा कर्मचारी अधिक वेतन, अधिक महंगाई भत्ता, अधिक किराया की मांग करते हैं। मालिकों के सामने अक्सर यह प्रश्न रहता कि वे कितना वेतन बढ़ाएं? ऐसे में कीमत सूचकांक एक अच्छा मार्गदर्शक बन सकता है। कीमत सूचकांक के आधार पर सरकार द्वारा न्यूनतम मजदूरी, महंगाई भत्ता आदि निर्धारित करने के बारे में निर्णय आसानी से लिया जा सकता है।

(2) मूल्य सूचकांक अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारक व अवस्फीतिकारक प्रवृत्तियों का भी अच्छा मापक है।

(3) उत्पादक सूचकांक अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में हो रही प्रगति का अच्छा सूचक है। इनका उपयोग भविष्य में उत्पादन की प्रवृत्तियों का पूर्वानुमान लगाने के लिए भी किया जा सकता है।

(4) अन्य सूचकांक जैसे राष्ट्रीय आय सूचकांक, प्रति व्यक्ति आय सूचकांक, निर्यात-आयात सूचकांक भी उपयोगी होते हैं। राष्ट्रीय आय सूचकांक आर्थिक संवृद्धि की दर को मापता है। प्रति व्यक्यि आय सूचकांक आर्थिक विकास की दर का सूचक है और यह गरीबी स्तर को भी दर्शाता है।

(5) सूचकांक विभिन्न देशों और एक ही देश के विभिन्न क्षेत्रों के बीच तुलना करने के लिए भी प्रयोग किए जा सकते हैं।

9.5 दिए हुए सूचकांक का अध्ययन

मान लीजिए, आपको किसी पत्र-पत्रिका या पुस्तक में कोई सूचकांक नजर आता है। कल्पना कीजिए, यह देश 'X' का थोक मूल्य सूचकांक है जो नीचे दिया गया है।

थोक मूल्यों का सूचकांक
(आधार 1980-81=100)

	प्राथमिक वस्तुएं	निर्मित वस्तुएं	ईंधन, बिजली व चिकनाई पदार्थ आदि	सभी वस्तुएं
भार	41.67	49.87	8.46	100
1	2	3	4	5
(वर्ष का अन्तिम) सप्ताह				
1980-81	100	100	100	100.0
1985-86	149	163	229	162.6
1990-91	249	267	400	270.7
1995-96	331	391	609	359.3

उपरोक्त सारणी में दिए गए सूचकांक में देश 'X' के थोक मूल्यों के बारे में हम अनेक निष्कर्ष निकाल सकते हैं। यह सूचकांक सभी वस्तुओं को निम्नलिखित तीन समूहों या वर्गों में वर्गीकृत करता है :

(1) प्राथमिक वस्तुएं जिसमें खाद्य; खाद्येतर और खनिज पदार्थ शामिल है;
(2) निर्मित वस्तुएं जिसमें खाद्य पदार्थ से निर्मित वस्तुएं; वस्त्र; रसायन व रसायन पदार्थ; मूलभूत धातुएं और धातु की वस्तुएं; मशीन व यातायात; उपकरण आदि शामिल हैं;
(3) ईंधन, शक्ति ऊर्जा, प्रकाश व चिकनाई देने वाले पदार्थ आदि।

इस सूचकांक के बारे में हम निम्नलिखित बातें कह सकते हैं :

(1) आधार वर्ष 1980-81 है जो 100 के बराबर लिया गया है, बाकी सभी वर्षों की कीमतों को इस आधार वर्ष की कीमतों के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया गया है।
(2) यह एक भारित सूचकांक है। वस्तुओं के विभिन्न समूहों को विभिन्न भार दिए गए हैं। प्राथमिक वस्तुओं, निर्मित वस्तुओं और ईंधन आदि को 100 में से क्रमशः 41.67%; 49.87% और 8.46% भार प्रदान किए गए हैं।
(3) सूचकांक वित्तीय वर्ष के अन्तिम सप्ताह में प्रचलित कीमतों के आधार पर बनाया गया है।
(4) प्रत्येक वर्ष का मूल्य सूचकांक केवल 1980-81 वर्ष की तुलना में कीमत स्तर में परिवर्तन को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, सभी वस्तुओं का मूल्य सूचकांक (कॉलम 5) यह दर्शाता है कि 1985-86 में कीमतें 1980-81 की कीमतों की 162.6% थी। यह 5 वर्षों में 62.6% की वृद्धि को दिखाता है। इसी प्रकार 1990-91 में कीमत स्तर 1980-81 के कीमत स्तर का 270.7% या जो कि 10 वर्षों में 170.7% की वृद्धि को दर्शाता है।

(5) यदि हम किसी विशेष वर्ष के सूचकांक की तुलना आधार वर्ष के स्थान पर किसी अन्य वर्ष से करना चाहते हैं तो हमें कुछ और अधिक गणना करनी पड़ेगी। मान लीजिए, हम 1995-96 वर्ष में प्राथमिक वस्तुओं के कीमत स्तर की तुलना 1990-91 वर्ष से करना चाहते हैं। 1995-96 वर्ष का कीमत स्तर 1990-91 के कीमत स्तर का कितने प्रतिशत है यह जानने के लिए हमें एक सरल प्रतिशत निम्नलिखित सूत्र द्वारा निकालना होगा।

$$\text{1995-96 का कीमत स्तर 1990-91 के प्रतिशत के रूप में} = \frac{\text{1995-96 का मूल्य सूचकांक}}{\text{1990-91 का मूल्य सूचकांक}} \times 100$$

$$= \frac{331}{249} \times 100 = 133 \text{ (लगभग)}$$

हमारा यह निष्कर्ष है कि 1990-91 व 1995-96 इन 5 वर्षों के दौरान कीमत स्तर 33% बढ़ा।

(6) हम विभिन्न वर्षों के दौरान वस्तु समूह की कीमतों में परिवर्तन की तुलना भी कर सकते हैं।

याद रखिए

- मूल्य सूचकांक निर्वाह लागत का और स्फीतिकारक व अव-स्फीतिकारक प्रवृत्तियों का अच्छा मापक होता है।
- उत्पादक सूचकांक आर्थिक प्रगति को और राष्ट्रीय आय सूचकांक आर्थिक संवृद्धि की दर को मापता है।
- प्रति व्यक्ति आय सूचकांक आर्थिक विकास की दर को मापता है।
- सूचकांक विभिन्न देशों और देश के विभिन्न क्षेत्रों के बीच तुलना करने में उपयोगी होते हैं।

पाठगत प्रश्न 9.2

कोष्ठक में दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) .... सूचकांक स्फीतिकारी और अव-स्फीतिकारी प्रवृत्तियों का अच्छा सूचक है। (मूल्य, उत्पादक)

(ii) आर्थिक संवृद्धि की दर .... सूचकांक के द्वारा मापी जाती है। (प्रति व्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय)

(iii) आर्थिक विकास की दर .... सूचकांक के द्वारा मापी जाती है। (प्रति व्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय)

(iv) किसी वर्ष को आधार वर्ष के बजाए किसी अन्य वर्ष से तुलना करने के लिए अतिरिक्त गणना .... पड़ती है। (करनी, नहीं करनी)

28.4 अदृश्य-शेष

सेवाएं अदृश्य मदों के रूप में वर्गीकृत की जाती हैं। अदृश्य मदों में पोत-परिवहन यानि जहाजरानी बैंकिंग, बीमा, परामर्श सेवाएं, विदेशी पर्यटन, निवेश से आय, हस्तांतरण भुगतान आदि शामिल किए जाते हैं। अब हम इन मदों पर एक-एक करके विचार करेंगे।

(i) बैंकिंग, बीमा, जहाजरानी आदि

विभिन्न देश एक दूसरे को बैंकिंग, बीमा, जहाजरानी व परामर्श सेवाएं आदि प्रदान करते हैं। जब एक देश दूसरे देश से ये सेवाएं प्राप्त करता है तो इसे सेवाओं का आयात कहते हैं और इसके लिए विदेशी मुद्रा में भुगतान करना पड़ता है। जब एक देश दूसरे देश को ये सेवाएं प्रदान करता है तो इसे सेवाओं का निर्यात कहते हैं। इसके लिए उसे विदेशी मुद्रा में भुगतान प्राप्त होता है।

(ii) विदेशी-पर्यटन

विदेशी-पर्यटन विदेशी मुद्रा की प्राप्ति और भुगतान का एक अन्य स्रोत है। जब विदेशों से पर्यटक किसी देश में आते हैं तो उनके द्वारा किए गए व्यय से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इसी प्रकार जब किसी देश के लोग अन्य देशों में जाते हैं तो उन्हें उन देशों में व्यय करने के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता होती है। इससे विदेशी मुद्रा दूसरे देशों में जाती है।

(iii) निवेश आय

अन्य देशों को दिए गए ऋणों पर एक देश को ब्याज प्राप्त होता है। देश के लोगों द्वारा अन्य देशों में किए गए निवेश पर लाभांश भी प्राप्त होता है। ये सभी प्राप्तियां भी विदेशी मुद्रा में होती हैं। इसी प्रकार अन्य देशों को ब्याज व लाभांश का भुगतान करने से विदेशी मुद्रा देश से जाती है।

(iv) हस्तांतरण भुगतान

एक देश के लोगों को अन्य देशों में रहने वाले अपने मित्रों, रिश्तेदारों आदि से उपहार आदि प्राप्त होते हैं। इन्हें एक पक्षीय हस्तांतरण कहते हैं। इसी प्रकार एक देश के लोग विदेशों में रहने वाले अपने मित्रों व रिश्तेदारों आदि को उपहार भेजते हैं। इस प्रकार हस्तांतरण भुगतानों के कारण भी विदेशी मुद्रा देश में आती है और देश से बाहर जाती है।

अदृश्य मदों से विदेशी मुद्रा की कुल प्राप्तियों और कुल भुगतानों का अन्तर अदृश्य-शेष (balance on account of invisibles) कहलाता है। यदि ये प्राप्तियां भुगतानों से अधिक हैं तो अदृश्य-शेष अधिशेष दर्शाएगा। यदि इन मदों से होने वाली प्राप्तियां इनके लिए किए जाने वाले भुगतानों से कम है तो अदृश्य-शेष घाटा दर्शाएगा।

तालिका 28.2 में अदृश्य मदों से भारत को 1980-81 से हुई प्राप्तियां, इन मदों के लिए किए गए भुगतान और इन मदों से निवल प्राप्तियों को दिखाया गया है।

तालिका 28.2

भारत में अदृश्य-शेष की स्थिति(करोड़ रु.)

वर्ष	अदृश्य मदों से प्राप्तियां	अदृश्य मदों के लिए भुगतान	अदृश्य मदों से निवल प्राप्तियां
1980-81	5669	1580	4311
1989-90	12484	11459	1025
1990-91	13394	13829	– 435
1991-92	23449	19191	4258
1992-93	23901	22564	1337
1993-94	30262	26413	3849

तालिका 28.2 से स्पष्ट है कि भारत की अदृश्य-शेष की स्थिति व्यापार-शेष की स्थिति से अच्छी है। वर्ष 1990-91 को छोड़कर अन्य सभी वर्षों में अदृश्य मदों से प्राप्तियां इनके लिए किए गए भुगतानों से अधिक है। अर्थात् 1990-91 को छोड़कर अन्य सभी वर्षों में अदृश्य शेष में अधिशेष की स्थिति रही है।

याद रखिए

- व्यापार-शेष केवल वस्तुओं के निर्यात और वस्तुओं के आयात के आधार पर निकाला जाता है।
- यदि वस्तुओं का निर्यात, वस्तुओं के आयात से अधिक है तो व्यापार-शेष अधिशेष दर्शाता है। यदि वस्तुओं का निर्यात, वस्तुओं के आयात से कम है तो व्यापार-शेष घाटा दर्शाता है।
- हमारे देश के व्यापार-शेष में सदैव घाटे की स्थिति रही है क्योंकि हमारे वस्तुओं के आयात जिस दर से बढ़े हैं हमारे वस्तुओं के निर्यात उससे कम दर से बढ़े हैं।
- विभिन्न प्रकार की सेवाएं जैसे परामर्श सेवाएं, विदेशी पर्यटन, निवेश से आय, हस्तांतरण भुगतान आदि अदृश्य मदें कहलाती हैं। इन मदों से प्राप्तियां और इनके लिए भुगतान का अन्तर अदृश्य-शेष कहलाता है। हमारे देश में अदृश्य-शेष की स्थिति व्यापार-शेष की स्थिति से बेहतर है।

पाठगत प्रश्न 28.1

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(i) वस्तुओं के निर्यात के मूल्य और वस्तुओं के आयात के मूल्य के अन्तर को.................................कहते हैं। (व्यापार-शेष, व्यापार-घाटा, लाभ)

उत्तर

पाठगत प्रश्न 9.1

(i) सामान्य आर्थिक क्रियाओं
(ii) उद्देश्य
(iii) (ब) खाद्य वस्तुएं, कपड़ा, ईंधन और किराया
(iv) फुटकर

पाठगत प्रश्न 9.2

(i) मूल्य (ii) राष्ट्रीय आय (iii) प्रति व्यक्ति आय (iv) करनी

पाठान्त प्रश्न

1. पढ़िए अनुभाग 9.3 (2)
2. पढ़िए अनुभाग 9.3 (5)
3. पढ़िए अनुभाग 9.3 (6)
4. पढ़िए अनुभाग 9.4
5. पढ़िए अनुभाग 9.5

अभ्यास के लिए संकेत

1. परिवार बजट पूछताछ के विचार का उपयोग कीजिए तथा खण्ड 9.3 में बताई गई समस्याओं को ध्यान में रखिए।
2. पहले जो वस्तुएं व सेवाएं आपने चुनी हैं, उनकी सूची बनाइए और फिर किसी सुपर बाजार या अन्य स्टोर में जाकर उनकी कीमतें लिखिए। माप की इकाई जैसे किलोग्राम, मीटर, लीटर, प्रति दर्जन आदि भी लिखिए। कीमतें वर्तमान समय में लिखी जा रही हैं। अतः ये चालू वर्ष की कीमतें (p_1) हैं। खाद्य वस्तुएं सापेक्षिक रूप से अमीरों की तुलना में गरीबों के लिए अधिक महत्त्व रखती हैं। इसी प्रकार से अन्य वस्तुओं के बारे में भी लिखिए।